आपातकाल

में

सृजन फुलवारी

जय हिंद सिंह 'हिन्द'

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

जय हिन्द सिंह 'हिन्द'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-202-9
संपादक -डॉ .प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्रसंदीप कुमार सोनी -, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय -15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (.प्र.म)481331
दूरभाष (.कार्या) -07633-253159
मोबाईल -9424765259
ईमेल -antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट -www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण -2020, जय हिन्द सिंह 'हिन्द'
मूल्य -50.रूपये 00
मुद्रकशैलू कम्प्यूटर्स -, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY JAI HIND SINGH 'HIND'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना)covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीपटीना सोनी-, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	सपने	6
2.	कहीं... भूत तो नहीं	7
3.	चुप हूँ मैं	8
4.	संघर्ष और जीवन	9
5.	ढूँढ़ रहा हूँ	10
6.	तेरा साथ	11
7.	दूध	12
8.	धुंध	13
9.	नहाओ	14
10.	नारी सशक्तिकरण	15
11.	पानी	16
12.	बड़े शख्स	17
13.	प्यार	18
14.	कोहराम	19
15.	सब ऐसे ही	20
16.	आजकल	21

सपने

मैं, तुम, हम
सब देखते हैं सपने
भयावह खुशनुमा रंगीन
मन को हैं झकझोर देते
एक,आस जगा देते हैं
पर,कभी पूरे नहीं होते
नींद के सपने
हमें सोने नहीं देते
दिन के
खुली आँखों के सपने
जीवन जीने का
बोध करा देते हैं
ये सपने
अपने सपने।

कहीं... भूत तो नहीं

रात के सन्नाटे में
कुत्तों की भौं-भुंकार
सियारों की चीख पुकार,
बिल्लियों की रुलाहट
उल्लू की हुदहुदाहट
कीटों की चिरचिराह
कहीं... भूत तो नहीं।

रात के सन्नाटे में
हवा का एक झोंका
अशुभ की आशंका,
पत्तों की पड़पड़ाहट
स्वपदचापों की खटपटाहट
पीछे से किसी के आने की आहट
कहीं... भूत तो नहीं।

रात क्या दिन दोपहर
मानव ही अमानव
सबसे बड़ा दानव,
निर्बल मनु की छटपटाहट
प्रतिपल-प्रतिदिन

बीत गया सो भूत
भविष्य हैं पुत्री-पूत,
कुछ करने की सुगबुगाहट
सम्भालें उनके कदमों भटकाहट
है शम्भू से यही चाहत
कहीं हो भूत नहीं,
कहीं भी भूत नहीं।

चुप हूँ मैं

चुप हूँ मैं
अब कम बोलता हूँ
नहीं, किसी भय से नहीं
अज्ञानता से भी नहीं
ऐसा भी नहीं, कि मैं बोलता नहीं
शायद विवशता हो कोई
नहीं, यह भी तो नहीं
अब, मैं बोलने से रुक जाता हूँ
होंठ सी लेता हूँ
समझदार जो हो गया हूँ
नाराज हो जाते हैं लोग
क्योंकि सच बोलता हूँ
जब भी बोलता हूँ
सच बोलता हूँ
चुप हूँ मैं
अब कम बोलता हूँ ।

संघर्ष और जीवन

घर की चारदीवारी के अन्दर
चौबीसों घण्टे कैद रहकर
हँसी-खुशी जीवन जीना
सबके बूते की यह बात नहीं
कई-कई हफ्तों, वर्षों-वर्षों
सकल उम्र बन्द कमरे में
नयी उमंग,नये जोश से
सस्नेह,असीम प्यार दे,
अपनों पर जीवन न्योछावर कर
निज जीवन से संघर्ष करती
पर, प्रतिपल आनंदित रहती
कर्तव्य पथ पर अग्रसर रहकर
नित नये किर्तिमान बनाती
कभी कभार कुछ क्षण चुराती
अपने लिए
स्वजनों के साथ बाहर की दुनिया
निहारने के लिए
वापस आती, पुनः लग जाती
अपने कर्तव्य पथ पर
जीवन और संघर्ष के लिए ।

ढूँढ़ रहा हूँ

इस अपार भीड़ में
ढूँढ़ रहा हूँ
कब से अपनो को
जो कुछ कम कर सकें
मेरी पीड़ा-वेदना
बाँट सकें दुःख
आ के खुद
सिर मेरा सहला सकें
कर सके बात मुझसे
दो शब्द प्यार-दुलार के
निःस्वार्थ
बिना किसी चाह के
ढूँढ़ रहा हूँ...।

तुम्हारे भरोसे
नहीं छोड़ूंगा
तुम्हारे भरोसे
यह काली रात
ढूँढ़ ही लूँगा
कोई जुगनू
भलमानुष,
जो करता होगा
मेरे मन की बात
नहीं छोड़ छोड़ूंगा
तुम्हारे भरोसे...।

तेरा साथ

मुझे चाहिए तेरा प्यार
और तेरा साथ भी,
चाहूँ जब तुझसे मिल लूँ
आँखों से जी भर लूँ पी।
पा जाऊँ जो तेरा साथ
एक पल छोड़ू न तेरा हाथ,
सदियों बैठ निहारा करूँ
जब तक भरे न मेरा जी।
मोती बन जब दिखें द्विज
अमृत रस टपके अधरों से,
तृप्त हो जाये मेरा हिय
बातों से मैं भर लूँ जी।
न कहूँ मैं तुझको चाँद
न लाऊँ मैं तारें तोड़ के,
आ लग जा गले मेरे तूँ
पा लें जन्नत हम जीते जी।
करते हम मुहब्बत इतना
पतंगा गूजर फूल जितना,
रहूँ सदा तेरा हमराह मैं

दूध

हरे राम हरे कृष्ण
हरे राम हरे कृष्ण।
रुक्मिणी के अपूर्ण कृष्ण
राधा के सम्पूर्ण कृष्ण,
मीरा के नाथ कृष्ण
सूर के सुर कृष्ण,
रसखान के रस कृष्ण
विहारी के भक्ति कृष्ण।
विष्णु के अवतार कृष्ण
पाण्डा के भतार कृष्ण,
देवकी के पूत कृष्ण
यशोदा के लल्ला,
कहता ये ग्वाला
राधा क्यूँ गोरी
मैं क्यूँ काला।
जेठ की दुपहरी हो
वर्षा हो या पाला
दूध तो गो-रस है,
अब तो पानी का
भी पड़ रहा लाला।

धुंध

ढाई टन के ए.सी. में जो बैठे हैं बन्द कमरों में
कारखानों से धुँआ जो निकलता महानगरों में
जो लोग सदा चलते रहते डीजल पेट्रोल कारों में,
भट्ठों की चिमनियों से निकले धुँए गगन बगीचों में
ग्लोबल वार्मिंग धुंध के क्या ये जिम्मेदार नहीं होंगे,
मानव सम्पन्नता के मानक क्या गुनहगार नहीं होंगे।

सत्ता विपक्ष के लोगों को क्या इसका भान नहीं होगा
मीडिया कैमरा वालों को क्या इसका ज्ञान नहीं होगा
कृषक को सिर्फ दोषी कहना वक्ताका सम्मान नहीं होगा,
कारण और निवारण हम हैं क्या इसका संज्ञान नहीं हमें
श्रमशक्ति नहीं मिलता किसान को इसका पता नहीं तुम्हें,
पर्यावरण मंत्रालय सो रहा क्या वेनावाकिफ अज्ञान रहे।

तकनीक विशेषज्ञ पराली से क्या उर्जा ईंधन बना नही सकते
मशीनें ऐसी विकसित कर इससे पशुचारा बनान ही सकते
क्या पराली से पेपर गत्ते, जैविक खाद बना नहीं सकते,
उन्नत तकनीकों से क्या डिस्पोजल वर्तन प्लेट नहीं बनते
कमाऊ विकल्प पाते किसान तो जलाने को मजबूर नही होते
नहीं होता इतना चिल्लपों 'हिन्द' चैन की नींद सो रहे होते।

नहाओ

नहाओ
खूब नहाओ
तन की मैल
साफ करने के लिए
नहीं अन्तरात्मा की
सफाई के लिए भी
लेकिन ध्यान रहे
पानी की बर्बादी न्यूनतम हो
वरन् एक दिन
खत्म हो जायेगा पानी
धरा बन्द कर देगी,
इसलिए नहाओ
खूब नहाओ,
जैसे
दाल में नमक लेते हो
स्वाद मिलता है
पेट भरते हो ।

नारी सशक्तिकरण

करुणमयी ममतामयी
शक्तिस्वरूपा जननकरी
बहन-बेटी-माँ-लुगाई
दीन-हीन दुखिया बेचारी।
अभिशप्त काया धारिणी
सर्वांग अहम् परोसनकारी
समृद्धिकरण सशक्तिकरण
नारा हाथ में लिए नारी।
घर चारदीवारी तक सिमट
संकीर्णता में जड़वत रहना
बाहर विदेश क्या हो रहा
इस पचड़े में न पड़ना।
तैंतीस क्या पंचदस फीसद
पा शासन में भागीदारी
परधानी या हो विधायकी
नारी होती क्या निर्णयकारी।
शत प्रतिशत पा हिस्सेदारी
नारी होंगी क्या स्वतंत्रकारी
पूत-पति-ससुर-देवर
होंगे तब किसके अधिकारी।
कब तक ढोल बजाओगे
अबला सशक्तिकरण का
सब शक्तियों से लैस कर
'हिन्द' कर दो स्वतंत्र नारी।

पानी

पानी कहो या जल नीर कहो
सारंग सलिल अम्बु वारि कहो,
वियाबान हो जाये हरा-भरा
चाहे मुझको पीर कहो।
कभी मैं यहाँ कभी वहाँ
धनरस बन घूमा सारा जहाँ,
जेम्सवाट ने उदक शक्ति से
रोशन किया सारा जहाँ।
जल ही जीवन सर्व सत्य है
फीसद हो सत्तर या नब्बे,
शम्वर प्रवाह के वेग से
उजड़ जाते कुनबे के कुनबे।
काक आचार पानी-पानी होय
वदराह तन वन अपना खोय,
प्रतिगामी प्रहसन का पात्र
प्रसाद प्रार्थी सम स्वभाव तोय।
शून्य सर्वमुख संचय कर
विष अमृत को दिया पनाह,
बड़भागी मैं चन्द्रमौलि का
धोता रहता सबका गुनाह।
बन अवलम्ब सबको पाला
हिस्सा बनाये क्षीर का ग्वाला,
मधुशाला में बैठ 'हिन्द'
विन आब पय पीये हाला।

बड़े शख्स

दिखने वाले
हर बड़े शख्स
उतने ही गड़े होते
जमीन के अन्दर
जितने दिखते बाहर
धोखा खा जातीं हैं आँखें
छद्‌म सच देखकर
कभी सोचा है
कितने उदास होते हैं
वे रोते हैं हँसते हुए
अपने गम समेटकर
नींद की गोलियाँ खाकर
सोते हैं अक्सर
चकाचौंध भरे सारे तिलिस्म
तब हैं टूट जाते
जब वे पकड़ में हैं आते
जान जाता है जमाना
कितने उपर खड़े
कितने जमीन में हैं गड़े
वे कैसे-कैसे हो गये बड़े।

प्यार

जब प्यार किसी का है मिलता
जीवन सुन्दर हो जाता है।
काँटे प्रसून हो उठते हैं
जंगल मधुबन हो जाता है,
हवा बसंती के प्रवाह से
तन-मन आनंदित हो जाता है।
वन के पंछी तब साथी होते
निर्झर का जल अमृत लगता,
जब कोई पास है मन के आता
वह क्षण मदमस्त कर जाता है।
ऋतु बसन्त की सुवास से
आम लोग भी बौरा जाते,
सुरभि होती जब मधुगंधी
कुछ करने का आवाहन हो जाता है।
सर्दी गयी पाहून जैसी
आया फाग रंग विरंगा
मधु आवेश का है उद्‌वेलन
कण-कण मदहोश कर जाता है।
धनिया मटर जौ सरसों
कण्ठ खोलते हैं खग के,
नभ उपवन का आलम यह
पागल हुई हर कली लता है।
विहंसी प्रकृति हँसी दिशाएँ
तरु पात-पात श्रंगार किया,
अंगड़ाए तन तरुणी जब
सब मधुमय 'हिन्द' हो जाता है।

कोहराम

चारो ओर मचा कोहराम
हाय अल्ला, हाय राम।-2
टूटामेंज, टूटा खटिया
टूटा सब घर अँगनइया,
ऊँच-नीच समस्त टूटा
संचित वर्षो का सपना टूटा;
कभी न आये ऐसा तूफान
हे अल्ला हे राम।
मुन्ना रहा, न रही मुनिया
शोभा भी छोड़ गयी अब दुनिया,
रोये शेरू, झबरा रोये
हुलस-हुलस हिय पिजरा में रोये;
घर-द्वार सब हुआ खदान
हेगॉड, हे भगवान।
असलम चाचा, पांडेय भईया
कल्लू दादा, समझू बनिया,
रेशमा मौसी, मंगली बुआ;
सिधार गए परलोक दुनिया,
जियेगें कैसे अब राम रहमान
क्या हिन्दू, क्या मुसलमान।
मस्जिद गिरी, मटियामेट शिवाला
चर्च, मठ सब हुआ दिवाला,
मण्डित ईश्वर, खण्डित विश्वास
मिटेगा कैसे 'हिन्द' यह त्रास;
जाति-धर्म का यह कैसा गुमान
एक ही जीसस, रहीम-राम।।
चारो ओर मचा कोहराम
हाय अल्ला, हायराम।-2

सब ऐसे ही

खत्म हो जायेगा
सब ऐसे ही,
आना जाना
रिश्ते निभाना
एक दूजे की हालचाल,
चाय के बहाने लेना
छलकाकर आँसू
नज़रें लड़ाना
बात-बात पर
ठहाके लगाना
खत्म हो जायेगा,
सब ऐसे ही...।

आजकल

रंगों के रंग बदल गये
साथ और संग बदल गये
अब कम दिखते
टेसू पलास ढाक गुलमोहर
चन्दन दाड़िम हरसिंगार के
खिले पुष्प अपने रंग में
किसने किया विवश
रंगत बदलने के लिए
प्रदूषण का रंग भर
वैमनस्यता का रंग भर
अंधाधुंध कट रहीं
रंगो की जड़ें
रिश्तों की जड़ें
संवेदनाओं की जड़ें
परम्पराओं की जड़ें
निस्तेज हो गयीं
रंगों की चटक
फिर गुनहगार कौन
लाचार कौन
करेगा उपचार कौन
आजकल।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

साहित्य के बिना किसी भी देश की सभ्यता व संस्कृति निर्जीव होती है। साहित्य का समाज से अभिन्न सम्बन्ध है। सामाजिक और विकासात्मक प्रवृत्तियाँ उत्कृष्ट साहित्य के लिए प्रेरणादायी होती हैं। साहित्य का सृजन किसी भी परिस्थिति में रुकना नहीं चाहिए। क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है। यह समाज को एक नयी दिशा प्रदान करता है। आपातकाल, युद्धकाल, लॉकडाउन या कोई अन्य समय हो, देश को साहित्यिक सृजन पर किसी भी प्रकार का कोई अंकुश नहीं लगना चाहिए। वर्तमान परिदृश्य में कोरोना नामक महामारी से भारत ही नहीं पूरा विश्व जूझ रहा है। इस महामारी के प्रसार को रोकने के लिए अपने देश में भी लॉकडाउन लगा है। घरों से बाहर निकलने के लिए कुछ रियायत के साथ पूर्णतः पाबन्दी लगी हुई हैं। यातायात साधनों, कल-कारखाने, दवाओं व खाद्य सामग्रियों को छोड़कर छोटी-बड़ी सभी दुकानों को पूर्णतः बन्द कर दिया गया है। जिससे कि कोविद-१६ विषाणु का प्रसार कम से कम हो। यह सही कदम है। ऐसी परिस्थिति में साहित्यकार अपनी लेखनी बन्द तो नहीं कर सकता और जब साहित्य सृजन होगा तो उसका प्रकाशन भी होगा। परन्तु लॉकडाउन की स्थिति में सभी प्रकाशन गृह बन्द पड़े हैं। विगत ४-५ वर्षों से हमारे देश में डिजिटल क्रांति का दौर जारी है। अब लोग एण्ड्रायड सेट, टैब, लैपटॉप, डेस्कटॉप आदि से बहुत घनिष्ठता से जुड़ चुके हैं। विभिन्न वेबसाइटों से अपने काम की चीजें खोजते रहते हैं। वेबदुनिया का क्षेत्र काफी विस्तृत हो रहा है। बहुत से पाठक भी तमाम साहित्यिक कृतियों को विभिन्न साइटों के माध्यम से पढ़ रहे हैं। डिजिटल उपकरण पुस्तकों की अपेक्षा आवागमन में सुविधाजनक हैं। ऐसे में प्रकाशन का महत्व काफी बढ़ जाता है। प्रकाशन क्षेत्र में अन्तरा शब्दशक्ति की भूमिका अति सराहनीय है। आशा और विश्वास है कि अन्तरा शब्दशक्ति द्वारा प्रकाशित पुस्तक साहित्य प्रेमियों की क्षुधा मिटाने में समर्थ होगी।

रचनाकार
जय हिन्द सिंह 'हिन्द'
मुहम्मदपुर (वाया-सगड़ी)
तहसील- सगड़ी, जनपद- आजमगढ़,
(उ.प्र.) पिनकोड- २७६१३८
Email- jaihiindsingh2774@gmail.com
Mobile - 8736067855, 9450117339

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-202-9
मूल्य 50/-
अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/